IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

थारू जनजातिः परम्परागत वस्त्र एवं आभूषण

डॉ0 नीलम

बागेश्वर, उत्तराखण्ड

ABSTRACT

थारू जनजाति कुमाऊँ मण्डल के उधमसिंह नगर जनपद के खटीमा, सितारगंज, नानकमत्ता, रूद्रपुर, बनबसा आदि क्षेत्रों में निवास करती है। इन क्षेत्रों के अतिरिक्त यह उत्तर–प्रदेश के 'लखीमपुर खीरी' तथा 'नेपाल' में भी निवास करती है, अलग–अलग क्षेत्रों में निवास के कारण इनकी संस्कृति एवं वेशभूषा में भिन्नता दिखाई पड़ती है। इनकी वेशभूषा को परम्परागत वस्त्र एवं आभूषण प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक समाज,संस्कृति एवं जीवन शैली के परिचायक होते हैं। जो तन ढकने व शरीर को अलंकृत करने का कार्य करते हैं। परम्परागत वस्त्र एवं आभूषण किसी समाज की संस्कृति के साक्ष्यों व जीवन शैली को उजागर कर सकती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ थारू समाज आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहा है, वहीं इनके परम्परागत परिधान व आभूषण घरों से निकलकर संग्रहालय व सांस्कृतिक मंच तक सीमित होते जा रहे हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से इन्हें संरक्षित करने का कार्य किया जा रहा है।

कुमाऊँ की थारू जनजाति जिन्हें आदिवासी कहा जाता था,1967 ई0 में जनजाति घोषित किया गया। यह जनजाति प्रमुखतया उधमसिंह नगर जनपद के खटीमा, सितारगंज, रूद्रपुर, नानकमत्ता, बनबसा आदि क्षेत्रों में निवास करती है। कुमाऊँ मण्डल के उधमसिंह नगर के इन क्षेत्रों के अतिरिक्त यह जनजाति उत्तर–प्रदेश के लखीमपुर, खीरी तथा नेपाल में भी निवास करती है।

थारू जनजाति के नाम और उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों ने अनेक मत प्रस्तुत किये गये है कुछ विद्वानों ने थारूओं को मंगोल प्रजाति से तथा कुछ ने मंगोल द्रविड़ प्रजाति से सम्बन्धित माना है। नृवशंविद् उनके चेहरे मोहरे को मंगोंलो के समान ठहराते हैं तथा मानते है कि उनके पूर्वज मंगोल रहे होंगे। इस दिशा में सबसे पहला प्रयास लखनऊ विश्वविद्यालय के मानवविद् डॉ0–डी0एन0 मजूमदार ने सन् 1941 ई0 की जनगणना के दौरान किया था।[1] मजूमदार ने मानवमितीय एवं रक्त समूह सर्वेक्षण के

आधार पर थारूओं को मंगोल सिद्ध किया है। चपटे चेहरे व नाक, पीले रंग की त्वचा, ओ रक्त वर्ग की प्रधानता जैसे मंगोल प्रजाति के गुणों से युक्त पाया है।[2] एक मत के अनुसार थारू लोग राजस्थान के थार मरूस्थल से आने के कारण ही थारू कहलायें।[3] एक मत के अनुसार अथर्ववेद का सहज ज्ञान रखने वाली इस प्रजाति का नाम 'अथस्वा' या 'थस्वा' से 'थडुवा' पड़ा।[4] नैथानी के अनुसार तराई जैसे गहन वातावरण में जीने वाली थारू जनजाति की वनौषधि विशेषज्ञता को देखकर ही उन्हें अथर्ववेद का स्मरण हुआ होगा, जिसमें विपत्ति तथा शत्रु–नाश की प्रार्थनाओं के साथ वनौषधियों एवं वृक्षों का चमत्कारिक वर्णन आया है। इस आधार पर इस नाम की प्राचीनता को हजार वर्ष से भी पहले का माना जाना चाहिए।[5] एक अन्य मत के अनुसार थारू जनजाति के लोग अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते हैं तथा इस जनजाति को चित्तौड़ के राजपूतों से जोड़ते हैं।[6] वहीं थारू जनजाति स्वयं को महाराणा प्रताप' के वंशजों के रूप में भी मानती है तथा कुछ थारूओं द्वारा अपने पर्वों में 'महाराणा प्रताप' की पूजा भी की जाती है।[7] अतः थारूओं के नाम व उत्पत्ति के सम्बन्ध में मतभेद स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। किन्तु इनके मंगोल प्रजाति से सम्बन्धित होने का मत सर्वाधिक मान्य है।

थारूओं के परम्परागत वस्त्र एवं आभूषण –

मनुष्य प्राचीन काल से ही तन ढकने की आवश्यकता एवं सौन्दर्य के लिए वस्त्रों एवं आभूषणों का प्रयोग करता आ रहा है, कई प्राचीन सभ्यताओं के साक्ष्यों, प्रतिमाओं, चित्रों आदि में वस्त्रों व आभूषणों को दर्शाया गया है, उसी प्रकार थारू समाज भी अपने परम्परागत वस्त्र एवं आभूषणों के माध्यम से अपनी भिन्न सांस्कृतिक छाप छोड़ता है। भले ही जीवन–शैली में परिवर्तन व आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण इनके समाज वेशभूषा व खान–पान में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई पड़ता है तथा इनके वस्त्र आभूषण घरों से निकलकर केवल संग्रहालयों व सांस्कृतिक झांकियों में नजर आते हैं थारूओं द्वारा इनका प्रयोग केवल विशेष पर्वों होली व झींगी तक ही सीमित रह गया है। इनके वेशभूषा व सांस्कृतिक ह्रास के कारण यह शोध पत्र थारूओं से सम्बन्धित परम्परागत वस्त्र एवं आभूषणों के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया जा रहा है। सम्बन्धित शोध पत्र में थारूओं के परम्परागत वस्त्र एवं आभूषणों के सम्बन्ध में जानकारी प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित की है।

चित्र सं0–01

थारूओं के परम्परागत वस्त्र– यह अपने परम्परागत वस्त्रों को सलीन व सूती कपड़े में सिलाई करके तैयार करते हैं। जिनका प्रयोग यह लोग होली व झींगी उत्सवों में करते हैं।

महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परम्परागत वस्त्रों की सूची–

1. फुतई (कोटि)– यह वास्केट के समान होता है। जिसे ब्लाउज या कुर्ती के ऊपर पहना जाता था।
2. अंगिया (ब्लाउज)– यह सादा सा ब्लाउज के समान ही होता है।
3. घघरिया–चोली (घाघरा–चोली)– घघरिया (घाघरा, लहंगा) के समान घेरे वाला होता है, चोली ब्लाउज के समान होती है जो सूती व सलीन के कपड़ों से बनाया जाता है।
4. अरघना (सूती दुपट्टा)– यह घाघरा–चोली, अंगिया आदि के साथ पहना जाता है। यह लेस वाला सूती दुपट्टे के समान होता है।
5. कुर्तिया (कुर्ती)–
6. झूला (ऊन से बना स्वेटर)– यह महिलाओं द्वारा बुनाई कर के बनाया जाता है यह ऊन द्वारा बनाया जाने वाला स्वेटर है।
7. बूटेदार कुर्ता
8. काली ओढ़नी– चमकीला दुपट्टा

पुरूषों द्वारा पहने जाने वाले परम्परागत वस्त्रों की सूची–

1. धोती–कुर्ता– सूती व सलीन के कपड़े से बनाया जाता था
2. फुतई (कोटि)– वास्केट के समान होता है जो कमीज और पैजामा व धोती–कुर्ता के साथ पहना जाता है।
3. पैजामा–कमीज–कमीज–पैजामा साधारण सा आज के कुर्ता–पजामा के समान ही होता था।
4. झगिया (सफेद शेरवानी)– झगिया सफेद रंग के चमकीले कपड़े में बना शेरवानी के समान होता था।
5. टोपी– गोल व सफेद टोपी।
6. बनियान (ऊनी स्वेटर)– हाथ से बुनाई द्वारा बनाया गया ऊन का स्वेटर होता था।

थारूओं के परम्परागत आभूषण –

थारूओं के परम्परागत आभूषण अधिकांशतः चाँदी के बनाये जाते थे, इसके अतिरिक्त कई आभूषणों में पीतल, कांसा, ताँबा आदि धातुओं का भी प्रयोग किया जाता था। वर्तमान समय में आर्थिक स्तर में सुधार व अन्य सामाजिक परिवेश से समन्वय के कारण स्वर्ण आभूषणों का प्रचलन होने लगा है परम्परागत आभूषण स्वर्ण के नाक एवं गले पर ही पहने जाते थे।

चित्र सं0–02

चित्र सं0–03

थारू महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परम्परागत आभूषणों की सूची–

1– वांकड़ा– यह पैरों में पहना जाने वाला आभूषण है। जो गोल चूड़ी के समान बना होता है, तथा इसके दोनों सिरे खुले होते हैं जिसे पैरों में डालकर दबाकर कस दिया जाता है। इसमें विभिन्न तरह के डिजायन भी बने होते हैं।

2– खडुआ– खडुवा हाथ का आभूषण है यह पैर में पहने जाने वाले बांकड़ा के समान ही दिखाई पड़ता है।

3– हसुलिया– यह गले का आभूषण है, चाँदी से बनाया जाता है, मोटाई लिए खूबसूरत डिजायन के साथ बनाया जाता था।

4– पहुँची– यह हाथ का आभूषण है जिसे काले या लाल रंग के कपड़े की चौड़ी पट्टी में सोने/चाँदी दोनों धातुओं के डिजायनदार दाने सिलकर बनाया जाता था।

5– बाजूबन्द– बाजुओं में पहने जाने वाला आभूषण है।

6– नकफूल, लौगी, नथुनिया– यह तीनों आभूषण नाक में पहने जाने वाले हैं, नकफूल (Nose Ring), लौंगी (Nose Pin) लौंग के समान क्षेय सा नाक का आभूषण है। जिसे आज भी सभी महिलायें पहनती हैं। यह स्वर्ण व चाँदी दोनों धातुओं से बनाया जाता है। नथनियाँ अधिकांशतः सोने (स्वर्ण धातु) की ही बनाई जाती है नथनियाँ विवाह व पर्वों में पहनी जाती है।

7– साकर–साकर गले का आभूषण है जो जंजीर (चेन) की तरह होता है। इसे स्त्री व पुरूष दोनों पहनते थे।

8– बाली– यह कान का आभूषण है। पहले चाँदी में ही बनता था अब यह सोने की भी बनाई जाने लगी है।

9– मांग बिन्दी– यह माथे का आभूषण है इसे माँगटीका भी कहा जाता है।

10– कमरपेटी– कमर का आभूषण है चाँदी में ही बनता है।

11– झांझर– यह पैर का आभूषण है, यह पैरों की पायल के समान है, कड़े में छोटे–छोटे घुंघरू लगे हुए होते हैं।

12– कठुला– यह गले का आभूषण है जिसे चाँदी में बनाया जाता था, यह एक जंजीर के ऊपर चाँदी के सिक्कों के समान–डिजायन बने होते है साथ ही चाँदी के बड़े–बड़े लौकिट बने होते थे।

13– कोटिया ठुमरी– यह कान में पहने जाने वाला आभूषण है ।

14– घूँघट, पुन्ज– पुन्ज एवं घूँघट भी गले में पहने जाने वाले आभूषण हैं। पुन्ज भी कुठला के समान बड़े लौकिट वाले हार के समान होता है। जिसकी जंजीर में कई सुन्दर–सुन्दर डिजायन बने होते हैं।

थारू स्त्रियों में शुरूआती समय में विवाह इत्यादि में मंगलसूत्र आदि पहनने का प्रचलन नहीं था, सकरी एवं जंजीर को ही पहना जाता था।

पुरूषों **द्वारा पहने जाने वाले** आभूषण–

थारू पुरूषों में आभूषण पहनने का प्रचलन कम ही रहा। इसका कारण इनकी आर्थिक स्थिति भी हो सकती है किन्तु फिर भी कनफूली, सकरी, छल्ला जैसे कुछ आभूषण पुरूषों में भी प्रचलित हैं।

1. कनफूली, धुनिया (कान में)– पुरूषों द्वारा कान में पहनी जाने वाली बाली।
2. छल्ला (उगंली)– यह अंगुठी के समान उगंली में पहने जाने वाला आभूषण है।
3. सकरी, हसुलिया (गले में)– कुछ पुरूषों के द्वारा जंजीर की तरह सकरी, हसुलिया पहनी जाती थी।

निष्कर्ष– थारू जनजाति वर्तमान परिवेश में रोजमर्रा के जीवन में परम्परागत वस्त्रों का प्रयोग ना के बराबर है। केवल अत्यधिक बुजुर्ग महिलाओं द्वारा घाघरा–चोली पहनी जाती है। कुछ परम्परागत आभूषण तीज–त्यौहारों में पहने जाते हैं, जो अत्यधिक चाँदी व पीतल के बने होते थे। सोने के आभूषणों का प्रयोग अन्य संस्कृतियों से सम्पर्क होने व आर्थिक स्थिति में सुधार का परिचायक है। इस वर्ग की नई पीढ़ी द्वारा परम्परागत वस्तुओं का त्याग कर नई सोच व वस्तुयें अपयी जा रही हैं। अतः अब परम्परागत वस्त्र एवं आभूषणों को सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, संग्रहालयों व लेखों के माध्यम से ही संरक्षित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. रावत, अजय सिंह, (2017), उत्तराखण्ड का समग्र राजनैतिक इतिहास, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल), पृ0–434.
2. मजूमदार, डी0 एन0, (1958), रेसेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. जोशी, घनश्याम, (2003) उत्तराखण्ड का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृ0 171–172.
4. नैथानी, शिवप्रसाद, मोहन (2011), उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल, पवेती प्रकाशन, श्रीनगर गढ़वाल, पृ0 383.
5. उपरोक्त, पृ0 383
6. जोशी, घनश्याम, उपरोक्त, पृ0–171, साक्षात्कार, गुलाब सिंह, उम्र–66 वर्ष, ग्राम–बाण्डिया–खटीमा, उधमसिंह नगर।
7. साक्षात्कार–प्रिया राना, उम्र–26 वर्ष, ग्राम बाण्डिया, खटीमा, उधमसिंह नगर, सह– प्राध्यापिका, राजनीतिक विज्ञान विभाग, श्री गुरूनानक देव, डिग्री कॉलेज नानकमत्ता।

साक्षात्कार सूची

1. साक्षात्कार–प्रिया कुमारी, उम्र– 26 वर्ष, ग्राम बाण्डिया–खटीमा, उधमसिंह नगर, सह–प्राध्यापिका, राजनीतिक विज्ञान विभाग, श्री गुरूनानक देव, डिग्री कॉलेज, नानकमत्ता।
2. साक्षात्कार–ज्योति राना, उम्र–29 वर्ष, ग्राम धुसरा, सितारगंज, उधमसिंह नगर, गृह विज्ञान विभाग, श्री गुरूनानक देव डिगी कॉलेज, नानकमत्ता।
3. साक्षात्कार–मानवती, उम्र–50 वर्ष, ग्राम धुसरा, सितारगंज, उधमसिंह नगर।
4. साक्षात्कार–नीमावती, उम्र–45 वर्ष, ग्राम धुसरा, सितारगंज, उधमसिंह नगर।
5. साक्षात्कार–कोयलवती, उम्र–75 वर्ष, ग्राम धुसरा, सितारगंज, उधमसिंह नगर।
6. साक्षात्कार–गुलाब सिंह, उम्र–66 वर्ष, ग्राम बाण्डिया, खटीमा, उधमसिंह नगर।
7. साक्षात्कार–हरीश सिंह राणा, उम्र–67 वर्ष, ग्राम बिचपुरी खैराना सितारगंज, उधमसिंह नगर।
8. साक्षात्कार–समसादेवा, उम्र–75 वर्ष, बिचपुरी खैराना, सितारगंज, उधमसिंह नगर।

9. साक्षात्कार–पूर्णिमा राणा, उम्र–18 वर्ष, ग्राम–बिचपुरी खैराना, सितारगंज, उधमसिंह नगर, छात्रा– बी0ए0 तृतीय सैमेस्टर, श्री गुरूनानक देव डिग्री कॉलेज, नानकमत्ता।
10. साक्षात्कार–लक्ष्मी राणा, उम्र–20 वर्ष, ग्राम–भरौनी– तहसील– सितारगंज, जिला– उधमसिंह नगर, छात्रा– बी0ए0–षष्ठ सैमस्टर, श्रीगुरूनानक देव, पी0जी0 कॉलेज, नानकमत्ता।
11. साक्षात्कार–शिवानी राणा, उम्र–22 वर्ष, ग्राम–भुड़महोलिया, खटीमा, उधमसिंह नगर। छात्रा– बी0ए0–षष्ट सैमस्टर, श्रीगुरूनानक देव, पी0जी0 कॉलेज, नानकमत्ता।
12. साक्षात्कार–भगवती देवी, उम्र–80 वर्ष, ग्राम–भरौनी, सितारगंज, उधमसिंह नगर।
13. साक्षात्कार–अमरवती देवी, उम्र–42 वर्ष, ग्राम–बिचपुरी खैराना, सितारगंज, उधमसिंह नगर।
14. साक्षात्कार–विनीता राणा, उम्र–22 वर्ष, ग्राम–चिन्तीमझरा, तहसील सितारगंज, जिला–उधमसिंह नगर।

चित्र साभार–

1. लक्ष्मी राणा, उम्र– 20 वर्ष, छात्रा– श्री गुरूनानक देव डिग्री कॉलेज, नानकमत्ता।
2. पूर्णिमा राणा, उम्र– 18 वर्ष, छात्रा– श्री गुरूनानक देव डिग्री कॉलेज, नानकमत्ता।
3. रूपाली देवल, उम्र–21 वर्ष, छात्रा– एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर, हेमवती नन्दन बहुगुणा, पी0जी0 कालेज, खटीमा, उधमसिंह नगर।
4. शिवानी, उम्र– 22 वर्ष, छात्रा– श्री गुरूनानक देव डिग्री कॉलेज, नानकमत्ता।

घोषणा पत्र

यह शोध पत्र मौलिक है और इसका प्रकाशन कहीं अन्यत्र नहीं हुआ हैं